अमेरिकी विदेश नीति : उद्देश्य

द्वारा:- डॉ.कुमार राकेश रंजन
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
एल.एन.डी.कॉलेज, मोतिहारी

यह सर्वविदित है कि प्रत्येक राष्ट्र के अपने राष्ट्रीय हित एवं स्वार्थ होते हैं जिन पर वह अपनी विदेश नीति की दशा एवं दिशा निर्धारित करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका भी इसका अपवाद नहीं है।
अमेरिकी विदेश नीति के निम्नलिखित उद्येश्य हैं:

I.राष्ट्रीय सुरक्षा
II.जनतंत्र की रक्षा
III.साम्यवाद का विरोध
IV.तनाव न्यूनतम करना
V.विश्व शांति
VI.नई विश्व व्यवस्था का निर्माण
VII.आतंकवाद का उन्मूलन

I.राष्ट्रीय सुरक्षा: अमेरिका की विदेश नीति का मुख्य लक्ष्य इस प्रकार की व्यवस्था करना है ताकि उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा पर किसी प्रकार की आंच न आने पाए। इसलिए अमेरिका यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका में शक्ति-सन्तुलन बनाए रखना चाहता है।
यूरोप में पश्चिमी जर्मनी और एशिया में जापान व पाकिस्तान का समर्थन उसकी इसी आवश्यकता पर आधारित रहे हैं ताकि सोवियत संघ और साम्यवादी शक्तियों के विरुद्ध शक्ति-सन्तुलन स्थापित किया जा सके।

II. जनतन्त्र की रक्षा: अमेरिका जनतन्त्र का प्रबल समर्थक है। प्रथम महायुद्ध उसने जनतन्त्र की रक्षा के लिए लड़ा था। द्वितीय महायुद्ध के समय रूजवेल्ट ने अमेरिका का उद्देश्य हिटलर की तानाशाही को नष्ट करना बताया था। विश्व में प्रत्येक स्थान पर चार स्वतन्त्रताओं-भाषण की स्वतन्त्रता, धर्म की स्वतन्त्रता, अभाव से स्वतन्त्रता और भय से स्वतन्त्रता की स्थापना करना अमेरिकी विदेश नीति का लक्ष्य रहा है।

III. साम्यवाद का विरोध: द्वितीय महायुद्ध के बाद अमेरिका ने साम्यवाद के बढ़ते हुए प्रसार को रोकने का दृढ़ संकल्प ले रखा था। चेस्टर बोल्स के शब्दों में- "युद्ध के बाद-मुख्यत: अमेरिकी कूटनीति साम्यवाद को उसके विस्तारशील सोवियत और चीनी रूपों में विशाल रूस और चीनी सीमा के चारों ओर शक्ति की स्थितियां उत्पन्न करके रोक रखने की रही है।" इसके लिए अमेरिका ने प्रत्येक सोवियत विस्तारवादी कार्य के मार्ग में विध्न डालने का निश्चय किया।
IV. तनाव न्यूनतम करना: सोवियत संघ और अमेरिका दोनों ही पारस्परिक तनाव को कम करने की चर्चा करते रहे हैं और दोनों ही एक-दूसरे पर तनाव बढ़ाने का आरोप लगाते रहे हैं। अणु परीक्षण प्रतिबन्ध सन्धि (1963), परमाणु अप्रसार सन्धि (1968), SALT-I एवं II समझौतों तथा INF सन्धि (1987), START (1991 एवं 1993) पर दोनों महाशक्तियों द्वारा हस्ताक्षर किए जाने से इस विचार को समर्थन मिलता है कि अमेरिका सोवियत संघ एवं रूस के साथ अपने तनावपूर्ण सम्बन्धों को सुधारना चाहता था।

V. विश्व-शान्ति: डलेस ने 1955 में कहा था कि "हमारी विदेश नीति का व्यापक लक्ष्य संयुक्त राज्य अमेरिका के लोगों को शान्ति और स्वतन्त्रता का सुख भोगने का अवसर प्रदान करना है।"

VI. नई विश्व व्यवस्था का निर्माण: सोवियत संघ के अवसान तथा सोवियत संघ एवं पूर्वी यूरोप में साम्यवाद के पतन के बाद राष्ट्रपति बुश ने नई विश्व व्यवस्था के निर्माण का उद्देश्य घोषित किया। यह ऐसी विश्व व्यवस्था होगी जिसमें अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्रीय ध्रुव होगा। विश्व में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ीकरण होगा तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्णय अमेरिकी विदेश नीति के उद्देश्यों के अनुरूप होंगे।

आज संयुक्त राज्य अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्रीय ध्रुव है, वह विश्व की एकमात्र महाशक्ति है। उसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता, उसे कोई ललकार या चुनौती नहीं दे सकता। उसके पास परमाणु अस्त्रों की ही प्रचण्ड शक्ति नहीं बल्कि उसके पास आर्थिक क्षमता भी अत्याधिक है।

इस समय विश्व की आय का एक-तिहाई हिस्सा अमेरिका में उत्पन्न हो रहा है। अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा आयातक है। विश्व व्यापार का पांचवां हिस्सा अमेरिका से होता है।

अमेरिका की भूख इतनी अधिक है कि विश्व के अधिकतर देश अपने निर्यातों के लिए अमेरिका पर निर्भर हो चुके हैं।
इन्टरनेट, आदि के तकनीकी आविष्कारों से वहां के पूंजी बाजार मे तेजी आई है। विश्व की पूंजी अमेरिका की ओर दौड़ रही है। डॉलर की मांग बढ़ रही है, डॉलर महंगा हो रहा है। डॉलर के दृढ़ होने से दूसरे देश अपने विदेशी मुद्रा भण्डार को डॉलर में रखना पसन्द करते हैं। इससे डॉलर को विश्व मुद्रा की संज्ञा मिल गई है। डॉलर की ताकत से अमेरिका का अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक एवं संयुक्त राष्ट्र पर दबाव बढ़ता जा रहा है। ये संस्थाएं अमेरिका के इशारे पर कार्य करने लगी हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी अन्तर्राष्ट्रीय वित्त संस्थाएं भी उसकी मुट्ठी में हैं।

VII. आतंकवाद का उन्मूलन: 11 सितम्बर, 2001 से पूर्व अमेरिका विश्व में आतंकवाद को रोकने के लिए नाटकीय वक्तव्य ही देता रहा है। भारत जैसे देशों में आतंकवाद निर्दोष लोगों को झुलसाता रहा और अमेरिका शाब्दिक संवेदना प्रकट करके अलग खड़ा होता रहा। भारत द्वारा ठोस सबूत पेश करने के बावजूद पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करने को अमेरिका तैयार नहीं हुआ।
विश्व व्यापार केन्द्र और पेंटागन पर हमला पहली बार अमेरिका पर सीधा आतंककारी हमला था। तब अमेरिकी राष्ट्रपति कहने लगे: “यह हमारे देश के खिलाफ युद्ध की कार्यवहियां हैं.....यह छदम् युद्ध है.....इस युद्ध को जीतने के लिए अमरीका कृतसंकल्प है.....।” अमेरिका ने बदले की कार्यवाही के लिए विश्वव्यापी समर्थन जुटाने का राजनयिक प्रयास शुरू किया। अमेरिका के अनुसार आतंकवादी हमले अमेरिका के खिलाफ युद्ध नहीं बल्कि यह युद्ध समूची सभ्यता के खिलाफ है।